ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* August- 2020
Innovation The Research Concept

विद्यालय इंटर्नशीप की वर्त्तमान स्थिति

Current Status of School Internship

Paper Submission: 13/08/2020, Date ofAcceptance: 26/08/2020, Date of Publication: 27/08/2020

शिव कुमार दाँगी
शोधार्थी,
स्कूल ऑफ एजुकेशन,
जयपुर नेशनल युनिवर्सिटी,
जयपुर, राजस्थान, भारत

रीना जैन
व्याख्याता,
स्कूल ऑफ एजुकेशन,
जयपुर नेशनल युनिवर्सिटी,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

अध्यापक शिक्षा को समस्त शिक्षा व्यवस्था का स्तम्भ माना जाता है और इस स्तम्भ की मजबूती प्रशिक्षित शिक्षको पर निर्भर करती है। इन प्रशिक्षित शिक्षको की कुशलता विद्यालय इंटर्नशीप कार्यक्रम पर निर्भर करती है। यह इंटर्नशीप कार्यक्रम जितना प्रभावी होगा छात्राध्यापको मे उतने ही व्यवहारिक ज्ञान की प्राप्ति व वास्तविक समस्याओ से परिचित होने का अवसर प्राप्त होगा। परन्तु वर्त्तमान समय मे इन प्रशिक्षुओ मे इंटर्नशीप के प्रति रूझान, उपस्थिति दर, अनुभवी शिक्षको की संख्या, व आधार भूत आवश्यक संसाधनो मे कमी प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिल रही है। ये कमी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से हमारे शिक्षा के स्तर को गिराते जा रही है। इसके सुधार हेतु अब एन0.सी0.टी0.ई0 के द्वारा तो अनेको अहम कदम उठाये जा रहे है इसी क्रम मे अब अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम को चार वर्षिय किया जा रहा है जिससे इन प्रशिक्षुओ की कौशौल मे अपेक्षाकृत अधिक वृद्वि किया जा सके। अर्थात् यह कह जा सकता है कि शिक्षको की प्रभावशीलता विद्यालय इंटर्नशीप पर निर्भर करती है।यह लेख शोध शीर्षक ''अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत संचालित विद्यालय इंटर्नशिप के प्रति हितधारको के प्रत्यक्षीकरण समभावनाओ और समस्याओ का झारखण्ड राज्य के संदर्भ में अध्ययन'' प्रस्तुत किया जा रहा है।

Teacher education is considered to be the pillar of the entire education system and the strength of this column depends on the trained teachers. The skill of these trained teachers depends on the school internship program. The more effective this internship program is, the more practical knowledge students get and the opportunity to get acquainted with the real problems. But at present, the trend towards internship in these trainees, attendance rate, number of experienced teachers, and lack of necessary resources are being seen directly. These shortages are directly and indirectly reducing our standard of education. Now many important steps are being taken by the NCC to improve this, in this sequence, the teacher education program is being made four years hence to increase the skills of these trainees relatively more. That is to say, the effectiveness of teachers depends on the school internship. This article presented the research titled "Study in the context of Jharkhand State of the beneficiary's potential and problems with respect to school internships conducted under the Teacher Education Program". Is going.

मुख्य शब्द : शिक्षा, इंटर्नशीप ।
Education, Internship.

प्रस्तावना

शिक्षा को सदैव से ही समाज तथा राष्ट्र की प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण और शक्ति शाली साधन के रू॰ में स्वीकार किया गया है। शिक्षक समाज का आईना होता है तथा इनका अनुसरण विश्व के प्रत्येक व्यक्ति करते है। क्योंकि ये वे प्रकाश पुँज है जो जहाँ भी खडा होते है प्रकाश ही फैलाते है इसलिए स्वंय भगवान सर्वगुण सम्पन्न होने के बाद भी गुरू का सहारा लिये।

भारत वैदिक काल से ही शिक्षा के क्षेत्र मे अग्रिम रहा है। उस समय अध्यापक शिक्षा की कोई अलग से व्यवस्था नही थी। गुरूकुल के ही उच्च कक्षा के जो मेधावी छात्र होते थे वे निम्न कक्षा के छात्रों को पढाया करते थे और फिर वे धीरे – धीरे अध्यापक बन जाते थे। ये अभ्यास के दौरान कोई समस्या आती थी तो गुरू जी इसका समाधान निकालते थे अर्थात् हम यह कह सकते है अनुभव व अभ्यास के माध्यम से अध्यापको का निर्माण किया जाता था।बौद्ध काल में शिक्षक बनने के लिए भिक्षु बनना पडता था जो धर्म, दर्शन, मठों आदि का ज्ञान प्राप्त करते थे फिर वे अनुभव के द्वारा धीरे – धीरे शिक्षक बन जाते

थे। इस्लामिक शिक्षा व्यवस्था में भी शिक्षको के लिए कोई विशेष शिक्षा की व्यवस्था नही थी वैदिक काल की भाति ही मेधावी छात्र आगे चलकर अनुभव की सहायता से शिक्षक बनते थे।ईसाईयों के काल मे शिक्षको की शिक्षा हेतु विशेष ध्यान दिया जाने लगा इसके लिए सर्वप्रथम 1716 मे ट्रानक्यूबर मे प्राथमिक शिक्षक के प्रशिक्षण हेतु नार्मल स्कूल की स्थापना की गई। इसी से प्रेरणा पाकर 1826 मे मद्रास मे प्राथमिक शिक्षक शिक्षा केन्द्र खोले गये। हम यह देख रहे है कि शिक्षक तथा शिक्षा का स्वरूप समयानुसार बदलते गया। अगर हम वर्त्तमान समय की बात करे तो शिक्षक शिक्षा में सुधार के लिए अनेको आयोग ने कई वर्षो तक सुझाव दिये। जैसे– कोठारी आयोग, चट्टोपाध्याय आयोग,रूममूर्तिआयोग इत्यादि। इनके सुझाव मे महत्वर्पूण दो बाते थी। इसके समयावधि मे विस्तार तथा पाठ्यक्रम मे बदलाव। अंततः वर्त्तमान स्थिति का आकलन करते हुए ''जे0 एस0 वर्मा0 कमिटी 2012'' का गठन किया गया तथा इनके सुझाव के आधार पर राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् द्वारा''रेगुलेशन 2014'' पास किया गया।इसके अनुसार बी0एड0 तथा एम0एड0 की अवधि, पाठ्यक्रम और विद्यालय इंटर्नशीप मे महत्वपूर्ण बदलाव किये गये। पहले इसका समयावधि एक वर्ष का था जिसे बढा कर दो वर्ष कर दिया गया। इंटर्नशीप के लिए 4 सप्ताह अवलोकन तथा 16 सप्ताह शिक्षण अभ्यास को सम्मलित किया गया। इस प्रकार के परिवर्तन का प्रमुख ध्येय यह था कि प्रशिक्षुओ का अधिक से अधिक व्यवहारिक व प्रयोगिक ज्ञान प्राप्त हो। वह केवल सैद्वान्तिक ज्ञान ही प्राप्त न करे। वे वास्तविक पर्यावरण मे रहकर समस्याओं, चुनौतियो,सम्भावनाओ को पहचाने थे बदला हुआ पाठ्यक्रम का स्वरूप वास्तव मे शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम को एक नवीन दिशा प्रदानकरती है, लेकिन एक प्रश्न मन मे आता है कि क्या ये नवीन स्वरूप के उद्देश्यो को वास्तविक रूप मे प्रशिक्षुओ के द्वारा प्राप्त किया जा रहा है ?

जहाँ एक मुझे लगता है कि वर्त्तमान स्थिति ये है कि शिक्षक इननवीन विषयो के मूलभूत ज्ञान से बिलकुल अनभिज्ञ है। इनके द्वारा अपनाया जाने वाले शिक्षण अधिगम प्रक्रिया विषय वस्तु के मूलभूत स्वरूप से बिलकुल भिन्न है। अर्थात् यह स्पष्ट होता है कि प्रशिक्षुओ को भ्रमित करने के साथ – साथ गलत सूचनाओ को सम्प्रेषित किया जा रहा है। क्या ऐसी स्थिति मे एक योग्य एवं दक्ष शिक्षक की कल्पना करना सार्थक है ?

विद्यालय इंटर्नशीप कार्यक्रम का उद्देश्य

1 योग्य एंव दक्ष शिक्षको का निर्माण करना।
2 विद्यालय के वास्तविक परिपेक्ष मे सैंद्वान्तिक व प्रायोगिक पक्ष मे संतुलन स्थापित करना।
3 प्रशिक्षुओं को विद्यालय मे होने वाले वास्तविक समस्याओ से परिचित कराना।
4 प्रशिक्षुओ मे इंटर्नशीप की सहायता से वर्त्तमान शिक्षा व्यवस्था से परिचित कराना व उसमे सुधार लाना।
5 प्रव्यक्ष रूप से अनुभव के माध्यम से सीखने का अवसर प्रदान करना।

इंटर्नशीप की चुनौतियाँ व समस्याएँ

1 प्रशिक्षुओं मे इंटर्नशीप के प्रति रूझान की कमी आना।
2 इंटर्नशीप के दौरान प्रशिक्षुओं की अनुपस्थिति दर मे वृद्धि।
3 इंटर्नशीप के लिए योग्य एंव अनुभवी शिक्षको की कमी।
4 इंटर्नशीप के लिए आवश्यक मानवीय एंव आधार भूत संसाधनो की कमी।
5 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय तथा इंटर्नशीप विद्यालय के बीच तालमेल की कमी।
6 इंटर्नशीप के प्रति प्रशिक्षुओ की बदलती मनोवृत्ति।
7 शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति समाज मे व्याप्त भ्रामक एंव गलत सूचनाएँ।
8 प्रशिक्षुओ और बालको के बीच क्षेत्रिय भाषा की समस्या।
9 इंटर्नशीप हेतु विद्यालय आवंटन की समस्या।
10 इंटर्नशीप के दौरान पर्यवेक्षण का अभाव।

विद्यालय इंटर्नशीप की चुनौतियो के समाधान हेतु निर्णायक उपाय

1 अध्यापक शिक्षको को अधिक से अधिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला व संगोष्ठी मे भाग लेने हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए।
2 अध्यापक शिक्षको को इंटर्नशीप का विस्तृत प्रशिक्षण देने की व्यवस्था करना चाहिए।
3 इंटर्नशीप के लिए ऑनलाइन पोर्टल शुरू किया जाना चाहिए जिसे विद्यालय आवंटन उपस्थिति दर्ज कराने आदि मे सुविधा हेतु।
4 विद्यार्थियो की उपस्थिति को नियमित करने के लिए विद्यालय का कुछ विशेषाधिकार प्रदान किया जाये तथा जिला शिक्षा अधिकारियो के द्वारा अचानक निरीक्षण किया जाय।
5 इंटर्नशीप के लिए सरकारी के साथ – साथ निजी विद्यालयो मे भी भेजा जाय ताकि प्रशिक्षुओ को नये–नये तकनीको तथा संसाधनो से परिचित होने का अवसर मिले।
6 प्रशिक्षुओ को इंटर्नशीप P.P.T. की सहायता से अन्य व्यवसाय कोर्स के इंटर्नशीप जैसा ही बनाना जाय जिससे उनको अन्य तथ्यो से परिचित कराया जा सके।
7 बाजार मे इंटर्नशीप के अच्छे – अच्छे पुस्तके उपलब्ध कराये जाये।
8 प्रशिक्षुओ को अनुभवी एंव योग्य पर्यवेक्षको से नियमित पर्यवेक्षक कराया जाय तथा उनको पृष्ठपोषण दिया जाय जिससे वे आवश्यक सुधार कर पाये।
9 इंटर्नशीप के दौरान प्रशिक्षुओ की सहभागिता विद्यालय मे अधिक से अधिक ली जाय।
10 प्रशिक्षुओ को इनके वास्तविक समस्याओ तथा जिम्मेदारियो से परिचित कराया जाय।

अध्ययन का का उद्देश्य

शिक्षा समाज का दर्पण है। स्कूली शिक्षा के लिए भावी शिक्षकों को तैयार करना अति आवश्यक है B-ed अध्ययन के दौरान छात्रों को स्कूल इंटर्नशिप पर भेजा

जाता है। ताकि स्कूल की जरूरत एवं छात्रों को पढ़ाने का तरीका सीख सके। इसके अंतर्गत पढ़ाने की विभिन्न तरीकों के अलावा समाज के साथ किस प्रकार जोड़ना है। यह भी सिखाया जाता है। स्कूल इंटर्नशिप की वर्तमान स्थिति को जांचने का यह प्रयास है।

निष्कर्ष

अंततः हम यह कह सकते है कि यह कार्यक्रम हमारे समाज व राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है इसके प्रति हमारे सरकारी तंत्र, समाज, प्रशिक्षु,अध्यापक शिक्षक अदि को अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन पूरे तनमयता के साथ करनी चाहिए तब हमारे पाठ्यक्रम के उद्देश्य को पूरा किया जा सकेगा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1 *N.C.E.R.T (2005) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या प्रारूप N.C.E.R.T नई दिल्ली।*
2 *N.C.T.E (2009) नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर टीचर एजुकेशप, N.C.E.R.T नई दिल्ली।*
3 *मानव संसाधन विकास मंत्रालय (2009) शिक्षा का अधिकार निः शुल्क एंव अनिर्वाय शिक्षा, नई दिल्ली।*
4 *राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (2014) नियमावली भारत सरकार का राज्य पत्र असाधारण भाग –3, खण्ड – 4, N.C.E.R.T नई दिल्ली।*
5 *करिकुलम फ्रेमवर्क टु ईयर बी0 एड0 प्रोग्राम (2015) N.C.T.E नई दिल्ली।*